UGC Approved Journal No - 47168, 49367
ISSN 2231 – 413X

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

http://shodhprerak.blogspot.com

Vol. - VII, Issue - 4, October 2017

Chief Editor :
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors :
Reeta Yadav
Pradeep Kumar

ISSN 2231 – 413X

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

Chief Editor:
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors:
Dr. Reeta Yadav
Dr. Pradeep Kumar

Volume VII **Issue 4** **October** **2017**

Published By:
VEER BAHADUR SEVA SANSTHA
LUCKNOW

Printed at:
F/70 South City, Rai Bareilly Road, Lucknow-226025
E-mail: shodhprerak@gmail.com, shodhprerakbbau@gmail.com
Cell NO.: 09415390515, 09450245771, 08960501747

Cite this Volume as S/P, Vol. VII, Issue 4, October 2017

- **अन्तरिक्षाधिपति इन्द्र : एक विमर्श** 258-260
  श्रद्धा सिंह, शोधच्छात्रा, संस्कृत-विभाग, कला-संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- **माधव-द्वैतवाद सम्प्रदाय में आत्मा का स्वरूप** 261-264
  डॉ. राम निवास सिंह,
- **पर्यावरणचिन्तने औपनिषदिकी दृष्टिः** 265-271
  खुशबू शुक्ला, शोधच्छात्रा, विशिष्टसंस्कृताध्ययनकेन्द्रम, जवाहरलालनेहरूविश्वविद्यालयः, नवदेहली-110067
- **बौद्ध धर्म में महिलाएँ** 272-275
  देवांशु कुमार सिंह, शोधार्थी, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
- **भोजपुरी : समकालीन दृष्टि** 276-282
  डॉ. अनीता, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी) कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- **कालिदास के महाकाव्यों में नाटकीय संवाद** 283-284
  अर्चना राय, शोधार्थी, संस्कृत, एम.एल.के.पी.जी. कालेज, बलरामपुर।
- **हिंदी और कन्नड़ के समानरूपी एवं समानार्थी शब्द** 285-290
  डॉ. एच.ए. हुनगुंद, सहायक प्रोफेसर, भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वीविद्यालय, वर्धा
- **भारतीय दल प्रणाली : एक अध्ययन** 291-294
  डॉ. अशोक कुमार, रामनरेश स्मारक डिग्री कॉलेज, नगवा, धानी, महराजगंज
- **सैन्धव सभ्यता की देन** 295-296
  डॉ. रेखा सिंह,
- **कला और समाज का आपसी तालमेल** 297-301
  डॉ. सुस्मिता लख्यानी, सहायक आचार्य, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय
  अज्जनी कुमार, शोध छात्र, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय
- **परवर्ती नाटकों पर कृष्णकथा का प्रभाव** 302-303
  अरुण कुमार, शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- **सुशासन की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा का तुलनात्मक अध्ययन** 304-306
  संजय शर्मा, शोधार्थी राजनीति विज्ञान, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)
- **सार्क के उद्देश्यों का समीक्षात्मक अध्ययन** 307-311
  डॉ. सीमा सिंह, पूर्व शोध छात्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- **किशोरावस्था के शैक्षिक विकास पर अभिभावकों की भूमिका** 312-316
  कुमार अमित, शोध छात्र, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
- **तत्वबोधविधायिनी में प्रतिपादित ध्यान का स्वरूप** 317-319
  प्रतिमा सिंह, शोध छात्रा, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- **सावयव द्रव्य का वैशेषिक दर्शन व विज्ञान के आलोक में विवेचन** 320-330
  ओमप्रकाश, शोधच्छात्र, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067

सुशासन की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा का तुलनात्मक अध्ययन

संजय शर्मा *

जिस तेजी से संसार बेहतर सामाजिक आर्थिक राजनीतिक व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है उतनी ही तीव्रता से गवर्नेंस तन्त्र नीति–निर्माताओं का ध्यान अपनी ओर खींच रहा है ताकि भ्रष्टाचार में डूबी व्यवस्थाओं को भ्रष्टाचार से मुक्त कराया जाय। नागरिक सेवाओं का न्याय संगत वितरण हो और जमीनी स्तर पर प्रत्येक के साथ न्याय हो सके। सुशासन के लिए जिन बातों की जरूरत होती है उनमें उत्तरदायित्व, जवाबदेही, पारदर्शिता, निर्णयों में सहभागिता, कानून का शासन शामिल है। सुशासन एक गतिशील अवधारणा है। प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय तक सुशासन का विचार अनेक चरणों से होकर गुजरा। प्रत्येक चरण पर यह जनहित को समर्पित है। आवश्यक नहीं कि सुशासन की जो कल्पना हमारी हो वह दूसरे की भी हो। प्रत्येक देश के जीवन मूल्यों के साथ इसका निर्धारण होता है। इस समय सुशासन का अधिकांशतः विचार पश्चिम से प्रेरित है। वह पाश्चात्य देशों के प्रशासन तन्त्र को आदर्श बनाकर पेश कर रहा है। पश्चिम का राजनीतिक ढाँचा, आर्थिक विकास, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानवाधिकार, न्यायिक, प्रणाली, पुलिस व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य के ढाँचे सुशासन के आदर्श है। भारतीय चितंन की लम्बी परम्परा को देखें तो विभिन्न चिंतकों ने इस पर गम्भीरता से विचार किया। सुशासन की पश्चिम आवधारणा के विपरीत भारतीय आवधारणा में अपनत्व का तत्व विद्यमान है। सुशासन की पश्चिमी आवधारणा का लक्ष्य 'उदारवादी' तथा साधन 'लोकतांत्रिक' है। इसके माध्यम से वह उदारीकरण निजीकरण एवं वैश्विककरण की साधना करता है। सुशासन के भारतीय दृष्टिकोण एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन शोधपत्र में किया गया है।

यूनानी दार्शनिक प्लेटों ने अपने आदर्श राज्य, राजा, न्याय व्यवस्था आदि का विस्तृत वर्णन किया है। प्लेटों कहते है– "सद्गुण ही ज्ञान है।" सद्गुणी व्यक्ति की सद्गुणी समाज का निर्माता हो सकता है। प्लेटों ज्ञान के शासन की बात करते है। ध्यान देने वाली बात है कि 'दास', 'स्त्री' के बारे में प्लेटों के तर्क न्याय संगत नहीं है। अरस्तू के चिंतन में राज्य संविधान, कानून, शासक, नागरिक आदि के बारे में विचार किया गया। अरस्तू की कुछ पंक्तियों पर दृष्टि डालें– 'राज्य कुलों और ग्रामों एक ऐसा समुदाय है, जिसका ध्येय पूर्ण और आत्मनिर्भर जीवन की प्राप्ति है।' 'राज्य का उदय' जीवन के लिए हुआ और सद्जीवन के लिए उसका अस्तित्व बना हुआ है। अरस्तू के न्याय सम्बन्धी विचार पर गौर करें तो वह 'समानता समानों में' ढूढ़ता है। क्या ऐसे समाज में सुशासन स्थापित हो सकता है जहाँ 'असमानता' विद्यमान है। इसके बाद हाब्स, लॉक, रूसों, बेंथम, मिल, ग्रीन एक लम्बी श्रृंखला उन विचारकों की है जिन्होंने अपनी दृष्टि से समय और परिस्थिति के अनुसार सुशासन की कल्पना की है। इन्हीं के तर्कों पर खड़ा आज का 'उदार लोकतंत्र' लोकतंत्र का पश्चिमी मॉडल जो लोकतंत्र, सुशासन, समाजिक हित के नाम पर लोगों को छल रहा है। सुशासन के पश्चिमी मॉडल में बाजार के पक्षधरों का कहना है कि बाजार भी लोकतांत्रिक तरीके से चल रहा है– आर्थिक गतिविधियों के साथ अब सभी मामले में खराब काम करके, खराब उत्पादन लेकर, खराब सेवा देकर आप बाजार में नही टिक सकते क्योंकि "उपभोक्ता ही बादशाह होता है।" यह तुलना और तर्क गलत है। असल मामला एकदम उल्टा है। सुशासन जहाँ समता की सर्वश्रेष्ठ उदात्त व्यवस्था है वहीं बाजार, लूट, मुनाफा और छल–कपट से दुनिया में आगे बढ़ने और असमानता बढ़ाने का जतन है। बाजार के लिए सिर्फ मुनाफा ही केन्द्रिय तत्व है। दो पैसों की चीज को दो हजार में बेचना वहाँ किसी नैतिक संकट का कारण न होकर 'स्मार्टनेस' है। पूँजीवादी राज्य में लोकतंत्र और सुशासन की बात करके व्यक्ति को बाजार के हवाले कर दिया गया है। नागरिक उपभोक्ता हो गया है। बाजार व्यक्ति के लिए निर्दयी होता है। आज सुशासन की बात करने वाली संस्थाएँ अमेरिकी प्रभाव से युक्त है। सुशासन की बात करने वाला

---

* शोधार्थी राजनीति विज्ञान, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)

पश्चिमी मॉडल की व्यवस्था खुद वैश्वीकरण के कम से कम दो बुरे प्रभावों से स्वयं को मुक्त नहीं कर पा रहा है– प्रथम, प्रदूषण और पर्यावरण क्षरण का प्रभाव राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर नजर आ रहा है। द्वितीय, बढ़ती हुई वैश्विक यात्राएं से नई किस्म की बीमारियाँ एक जगह से दूसरी जगह फैल रही है।

भारतीय चिंतन में राज्य, प्रजा, अधिकारी सबके कर्त्तव्यों से संबंधित बाते कहीं गई, वहीं सुशासन है। वेदों में विभिन्न प्रकार की शासन व्यवस्था का वर्णन है। अर्थववेद में कहा गया है– "विराड् वा इदमग्र आसीत।" यानी ऐसा राज्य जहाँ कोई शासक न हो। सोचने वाली बात है क्या हम ऐसे सुशासन की कल्पना कर सकते हैं जहाँ शासक नहीं स्वयं जनता समस्त प्रबंधन करती हो। वाल्मिकी रामायण में राम कहते हैं– **"सत्यमेवानृशंसं च राजवृत्तं सनातनम्। तस्मात सत्यात्मक राज्य सत्ये लोकः प्रतिष्ठितः।।**

राज्य सत्य के साथ कभी समझौता न करें और सत्य के प्रतिपालन में हिंसा भी न हो। राज्य सत्य के साथ आत्मीयता नहीं रखता और वह हिंसक है तो फिर वहां सुशासन नहीं हो सकता। सुशासन का इससे बेहतर विचार और क्या हो सकता है? महाभारत के शांति पर्व में भीष्म युधिष्ठिर से कहते है कि– "धर्मानुवर्ती राजा का यह कर्तव्य है कि वह अपना प्रिय परित्याग कर वहीं करे जो लोकहित में हो। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में कहा है– "राजा राज्य का सेवक है जिसकी अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा नहीं होती।" कौटिल्य "राजा के दिल को प्रजा का शील मानते हैं।" कौटिल्य ने राजा की योग्यता से लेकर अधिकारियों की नियुक्त तक का विस्तृत मापदंड निर्धारित किया है। इस तरह दायित्व, उत्तरदायित्व सत्य और शांति के आधार पर जो शासन हो वही भारतीय विचारधारा में सुशासन है।

"पश्चिमी सुशासन की अवधारणा" आज नव उदारवादी व्यवस्था के साथ जुड़ी हुई है। क्या भ्रष्टाचार का सम्बन्ध नव उदारवादी, आर्थिक सुधारों से है या इस तरह का याराना, पूँजीवाद का नतीजा है? भ्रष्टाचार का भी पूरी तरह से उदारीकरण हो गया है। असल में, यह अवधारणा अपने आप में एक झूठ है कि लाइसेंस कोटा परमिट राज खत्म हो जाने पर भ्रष्टाचार खत्म हो जायेगा। लाइसेंस–कोटा–परमिट राज्य भी एक तरह का नियंत्रित पूँजीवाद था। जिसमें हर लाइसेंस कोटा परमिट की कीमत थी। नियंत्रित और बंद अर्थव्यवस्था के कारण दांव इतने ऊँचे नहीं थे, जितने कि आज है। यह सच है कि सुशासन और पश्चिमी लोकतंत्र की कहानी आधुनिक विश्व की पहचान बन गई है। लेकिन इससे जुड़ी विडंबनाएँ भी है। खून पसीने और आँसुओं से आम जनता क्रान्तियों की जमीन सींचतीं है, फिर छली जाती है ऐसे में लोगों में गुस्सा और हताशा की भावना स्वाभाविक है।

भारतीय संविधान को "सर्वे भवन्ति–सुखिनः" और "सत्यमेव जयते" का उद्घोष करते हुए अपनाया गया उसके पीछे सुशासन की भारतीय अवधारणा थी। आधुनिक भारतीय नेताओं और विचारकों में महात्मा गाँधी को सुशासन संबन्धी भारतीय परम्परा की सोच का वारिस कहा जा सकता है। उन्होंने अलग–अलग समयों और प्रसंगों में जो स्वराज के बारे में विचार दिया वही वास्तव में सुशासन संबंधी विचार है। गाँधी जी कहते है स्वराज से मेरा अभिप्राय लोकसम्मति से होने वाला भारतवर्ष का शासन है। मेरे सपने के स्वराज में जाँति और धर्म का भेद नही होगा। मेरे सपनों का स्वराज गरीबों का स्वराज होगा। गाँधी जी का मानना है कि ऐसा शासन जो लोकसम्मति से चले, जो सबके कल्याण के लिए हो, जिसमें सत्ता पर मुठ्ठी भर लोगों का कब्जा न हो। जहाँ निचले तबके को भी सुविधा मिले। यह सत्य, अहिंसा और नैतिकता से संचालित हो। इतनी गहरी कल्पना सुशासन के संदर्भ में राष्ट्रपिता की थी। भारत को अपनी सुशासन की कल्पना को फलीभूत करने के लिए बहुत कुछ करना है। जब हम स्वयं वास्तविक सुशासन के साकार रूप हो जायेगें तो विश्व स्वयं हमारे आदर्शों पर चलेगा। आज वैश्वीकरण के दौर में पश्चिम प्रभाव में भारत में गाँधी के आदर्श शासन के दिए रामराज्य की कल्पना तुच्छ राजनीति का शिकार हो गई। जबकि 14 अगस्त, 1947 को अपने प्रसिद्ध भाषण "नियति से साक्षात्कार" में नेहरू जी ने कहा था "सुशासन का अर्थ, न्याय की रक्षा, सशक्तीकरण, रोजगार और सेवाओं का प्रभावी निष्पादन है।"

पश्चिमी विचारों पर आधारित सुशासन की अवधारणा भारतीय जीवन मूल्यों से मेल नहीं खाती है। हम अपने जीवन मूल्यों से आई सुशासन की अवधारणा को अपनाकर अपने लोगों के जीवन में

खुशहाली ला सकते है। दुःख–दर्द और संघर्षों के दौर से गुजरते हुए देश मजबूती और संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। लेकिन हमें सोचना और समझना ही होगा कि लम्बे संघर्षों के दौर में विकसित हमारी जीवन दृष्टि कहीं भटक तो नहीं गई है। उस समय जब "मध्य रात्रि में विश्व सो रहा था और भारत जीवंतता और स्वतंत्रता के साथ जागृत हुआ था, हमने जो वादे किये थे क्या हम उन्हें निभाने में सफल रहें है। भारतीयों ने भौतिकता से दूर एक दुनिया की कल्पना की है और अध्यात्म को जीवन जीने के तरीके के रूप में अपनाया है। हमारे महाकाव्य अच्छे चारित्रिक व्यवहार, बुरे पर अच्छे की विजय के उदाहरण से भरे पड़े है। आज भी हमारे बच्चों को महान राजाओं जैसे बलि की दानवीरता, शिवी का दान एवं वचनवद्धता, विक्रमादित्य की ईमानदारी, उदारता और धर्म परायणता की कहानियाँ सुनाई जाती है। कोई तर्क नहीं है, कि क्या इन मूल्यों से सुशासन लाने की कोशिश नहीं की जा सकती है।

सन्दर्भ :

1. योजना : फरवरी 2015 – संघीय ढ़ाचा एवं राजनीति
2. योजना : मार्च 2014 – प्रशासनिक सुधार
3. योजना : जुलाई 2014 – लोकतंत्र एवं चुनाव सुधार
4. योजना : जनवरी 2013 – सुशासन

***